भीतर का पैशन ही बनाता है सफल पत्रकार– गीताश्री

हिंदी विवि में 'मीडिया, कारपोरेट और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' विषय पर संगोष्ठी

वर्धा दि. 11 सितंबर 2012 : आउटलुक की सहायक संपादक गीताश्री ने महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र की ओर से आयोजित संगोष्ठी में संबोधित करते हुए कहा कि पत्रकार बनने के लिए पैशन होना जरूरी है। इसके लिए अलग माइंडसेट और तेवर की जरूरत है। पत्रकार किसी मशीनरी के कलपुर्जे की तरह कार्य नहीं कर सकता। पत्रकारिता का हुनर सामान्य पेशे से बिल्कुल अलग है। यह विचार उन्होंने 'मीडिया, कारपोरेट और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में व्यक्त किये।

संगोष्ठी की अध्यक्षता हिंदुस्तान टाइम्स के पूर्व संपादक सी.के. नायडू ने की। इस अवसर पर इंडियन एक्सप्रेस के पूर्व संपादक दर्शन देसाई मुख्य अतिथि के रू‍प में उपस्थित थे। मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार राय 'अंकित' ने संयोजन की भूमिका निभाई।

गीताश्री ने कहा कि वर्तमान में मीडिया के समक्ष ढेर सारी चुनौतियां है। सबसे बड़ी चुनौती सामाजिक सरोकारों को जिंदा रखने की है। पत्रकारिता के छात्रों को चौकन्ना रहने की सीख देते हुए उन्होंने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सबसे ज्यादा चुनौती समझौतावादी पत्रकारों से है। कारपोरेट समूहों के बारे में उन्होंने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को थोड़े के लिए बाधित किया जा सकता है लेकिन ज्ञान पर कब्जा नहीं किया जा सकता है।

हिंदुस्तान टाइम्स के पूर्व संपादक सी.के. नायडू ने कहा कि पत्रकारों को जोश में होश नहीं खोना चाहिए। उन्हें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है लेकिन उसका दुरूपयोग नहीं होना चाहिए।

इंडियन एक्सप्रेस के पूर्व संपादक दर्शन देसाई ने कहा कि पत्रकार आज भी सबसे ज्यादा ईमानदारी से अपना कार्य कर रहे हैं। उन्होंने छात्रों को सलाह देते हुए कहा कि जब वे पत्रकारिता के पेशे को बिना किसी दबाव के अपनाए, उन्हें यह सोचना चाहिए कि तमाम विषम परिस्थितियों के बावजूद जनसरोकार की खबरों को किस प्रकार जगह दे पाते हैं। पत्रकार को मिशन और प्रोफेशन जैसे झंझावातों से दूर होकर कार्य करना चाहिए।

विश्वविद्यालय के अतिथि लेखक संजीव ने कहा कि पत्रकारिता का प्राथमिक लक्ष्य सामाजिक भूमिका होना चाहिए। एक पत्रकार को हमेशा अपनी आत्मिक शक्ति को बचाकर रखना चाहिए क्योंकि आत्मिक शक्ति के लिए कोई प्रशिक्षण नहीं होता है।

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार राय 'अंकित' ने कहा कि एक पत्रकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती कारपोरेट और अपने काम के बीच समन्वय बनाए रखने की है। उन्होंने पत्रकारिता की नई शब्दावली 'मीडियोक्रेट' का उल्लेख करते हुए कहा कि क्या सचमुच मीडिया में ऐसे लोग हैं?

वक्ताओं का स्वागत संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के सहायक प्रोफेसर रेणु सिंह, धरवेश कठेरिया और डॉ. अख्तर आलम ने पुष्पगुच्छ और चरखा देकर किया। धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्रोफेसर धरवेश कठेरिया ने किया। इस अवसर पर बहुवचन के संपादक अशोक मिश्र, सहायक प्रोफेसर संदीप वर्मा, राजेश लेहकपुरे समेत विभिन्न विद्यापीठ के शोधार्थी एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित थे।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी